Indian J. Soc & Pol. 03(01): 2016 :119-120 **ISSN 2348-0084(P)**
ISSN 2455-2127(O)

सल्तनतकालीन दिल्ली का उद्भव व विकासः एक ऐतिहासिक अध्ययन

पवन कुमार यादव[1]
[1]असि0प्रोफेसर, इतिहास विभाग, आर एम पी जी कालेज सीतापुर (उ0प्र0) भारत

ABSTRACT

सल्तनत काल के विभिन्न राजवंशों के विभिन्न शासकों के समय में हर बार एक नई दिल्ली का निर्माण किया जाता है जो तत्कालीन समय में स्थापत्य का एक शानदार नमूना थी जो आज भी भग्नावशेष के रूप में उस अतीत के गौरव का बखान कर रही है। सल्तनतकाल में कुतुबुद्दीन ऐबक, कैकूबाद, अलाउद्दीन खिलजी, गियासुद्दीन तुगलक, मुहम्मद तुगलक, फीरोजाशाह तुगलक ने अपने–अपने तरह से अलग–अलग स्थानों पर दिल्ली को आबाद किया उसे सजाया और सवांरा। सल्तनत काल की उस दिल्ली का अद्यतन विकास एवं विस्तार जारी है और अब यह सैकड़ों मील मे विस्तृत है और वर्तमान में भी भारत की राजधानी है। इस शोध पत्र में मैने सल्तनत काल में दिल्ली के बार–बार बसने और उजड़ने (उत्थान एवं पतन) की ऐतिहासिक यात्रा को रेखांकित करने का प्रयास किया है।

KEYWORDS: *दिल्ली, राजधानी, सल्तनतकाल*

भारत का इतिहास अतिप्राचीन तथा गौरवशाली है प्राचीन भारतीय इतिहास के बारे में हमें पुरातात्विक साक्ष्यों, ऐतिहासिक एवं धार्मिक ग्रन्थों, लौकिक साहित्यों, विदेशी यात्रियों के वृत्तान्तों से अनेक जानकारियां प्राप्त होती हैं। भारतीय इतिहास में राजवंषों के उत्थान, विकास एवं उनके पतन से संबंधित अनेक विवरण प्राप्त होते हैं।

भाारतीय ऐतिहासिक स्रोतों से हमें ज्ञात होता है कि सर्वप्रथम मगध क्षेत्र (वर्तमान बिहार) में एक शाक्तिशाली राजवंश का उदय हुआ। यह वंश शिशुनाग वंश के रूप में ख्याति प्राप्त किया। जिसमें शिशुनाग व कालाशोक जैसे प्रतापी राजा हुए। इसके पश्चात् हर्यक वंश के बिम्बसार, अजातशत्रु और उदायिन ने मगध को एक महान राज्य के रूप में परिणत किया। यही काल इतिहास में बौद्ध काल के रूप में भी जाना जाता है। बौद्ध काल को भारत में द्वितीय नगरीकरण की शुरूआत माना जाता है। इस काल में राजगृह, वैशाली, चम्पा, काशी, साकेत, कौशाम्बी, श्रावस्ती, विदिशा, उज्जैन जैसे अनेक नगरों का उद्भव एवं विकास हुआ। सर्वप्रथम राजगृह महान मगध राज्य की राजधानी के रूप में गौरव प्राप्त किया। कालान्तर में अजातशत्रु के पुत्र उदायिन ने गंगा तथा सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र नगर की स्थापना की तथा राजधानी को राजगृह से पाटलिपुत्र स्थानान्तरित किया।

पाटलिपुत्र दीर्घकाल तक राजधानी के रूप में ख्याति प्राप्त करती रही। हर्यक वंश के पश्चात् महान मौर्य वंश और गुप्त वंश के शासकों ने पाटलिपुत्र को अपनी राजधानी के रूप में प्रयोग किया। पाटलिपुत्र ज्ञान, विज्ञान, राजनीति, कला, उद्योग, साहित्य के महान केन्द्र के रूप में विश्वविख्यात हुई।

गुप्त वंश के पतन के पश्चात् सम्राट हर्षवर्धन के काल तक आते–2 पाटलिपुत्र का गौरव समाप्त होने लगा और उसका स्थान कन्नौज ने ले लिया। कन्नौज 7वीं शदी से लेकर 12वीं शदी तक उत्तर भारत की राजनीति का केन्द्र बना रहा। राजपूत काल के पतन के अंतिम समय में उत्तर भारत की राजनीति के केन्द्र के रूप में एक नये नगर का उत्थान होने जा रहा था और यह नगर दिल्ली था। राजधानी के रूप में दिल्ली की स्थापना, उसका उत्थान एवं विकास भारतीय इतिहास का एक रोचक तथ्य है।

दिल्ली को राजधानी के रूप में गौरव सल्तनत काल में प्राप्त हुआ। सल्तनत काल के तुर्क शासकों ने दिल्ली को अपने–अपने तरह से बसाया, सजाया और सवांरा। सल्तनत काल में दिल्ली कई बार आबाद हुई और कई बार उजाड़ हुई। सल्तनत काल से लेकर वर्तमान काल तक की दिल्ली हजारों वर्ष की यादों को संजोये हुए वर्तमान समय में स्वतंत्र भारत की राजधानी के रूप में प्रयोग हो रही है।

वर्तमान में भी दिल्ली का विकास एवं विस्तार एवं विस्तार जारी है और यह मेरे शोध के लिए रूचि का विषय है कि यह ज्ञात हो सके जो दिल्ली वर्तमान में भारत की राजधानी के रूप में प्रयोग हो रही है उसके विकास की ऐतिहासिक यात्रा क्या रही है।इस शोध पत्र में मैनें उन तथ्यों को खोजने का प्रयास किया है जो सल्तनत काल में दिल्ली के निर्माण, उत्थान और विकास में कारक रहे हैं। इस शोध पत्र में निम्नलिखित प्रश्नों का अन्वेषण करने का प्रयास किया गया है–

1. सल्तनत काल में किन महत्वपूर्ण राजवंशों ने शासन किया ?
2. सल्तनत काल में प्रमुख शासक कौन थे ?
3. सल्तनत काल में दिल्ली की भौगोलिक स्थिति में क्या परिवर्तन हुआ ?

इस शोधपत्र में उपर्युक्त प्रश्नों की गवेषणा के लिए यथासंभव प्राथमिक व द्वितीयक स्रोतों की सहायता ली गयी है। ऐतिहासिक विशलेषण पद्धति का प्रयोग करते हुए तथ्यों के अध्ययन से निष्कर्ष निकाले गये हैं।

1: Corresponding Author

भारतीय इतिहास में सल्तनत काल तुर्क शासन की स्थापना से प्रारम्भ होता है जिसका काल 1206ई0 से लेकर 1526 ई0 तक है। इस काल में गुलाम वंश, खिलजी वंश, तुगलक वंश, सैय्यद वंश एवं लोदी वंश के शासको ने शासन किया। इस काल में कुतुबुदीन ऐबक, इल्तुतमिश, बल्बन, अलाउद्दीन खिलजी, गियासुद्दीन तुगलक, मुहम्मदबिन तुगलक, फिरोजशाह तुगलक जैसे महान शासकों ने शासन किया।

सल्तनत काल में आये महान परिवर्तनों में दिल्ली शहर का विस्तार भी महत्वपूर्ण है। मो0 हबीब के अनुसार, ''1192 ई0 में मोहम्मद गौरी ने चौहान वंश के अंतिम शासक पृथ्वीराज चौहान को हराकर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। प्रो0 हबीब ने इस शहर की पुनर्स्थापना का श्रेय सुल्तान शमसुद्दीन इल्तुतमिश (1211–36) को दिया है जिसने एक नये युग की शुरूआत के प्रतीक स्वरूप एक ऐतिहासिक मीनार का निर्माण कराया था।''(हबीब, 2002, 23)

ब्रजकृष्ण चॉदीवाला के अनुसार सल्तनत काल के पूर्व की दिल्ली कई नामों से जानी जाती थी। महाराज युधिष्ठिर ने यमुना इन्द्रप्रस्थ रखा था, राजा अनंगपाल के समय इसका नाम अनंगपुर अथवा अड़गपुर था। पृथ्वीराज चौहान जिसे रायपिथौरा भी कहते है, उसने महरौली में रायपिथौरा का किला बनवाया था।''(चांदीवाला,2005,02.03) इब्न–ए–बतूता के अनुसार, 14वीं शताब्दी में दिल्ली ''वास्तव में एक नगर नहीं है वरन एक दूसरे से मिलकर बसे हुए 4 नगरों से बना है।''(गोपाल,2003,28)

मदन गोपाल ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि, ''कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा दिल्ली जीतने के पश्चात् इसका नाम 'कुतुबु देहली' पड़ा। बल्बन के पोते कैकूबाद के समय यह 'किलोखड़ी' के नाम से जाना जाता था। अलाउद्दीन ने सीरी में एक किला बनवाया और इसका नाम 'सीरी' पड़ा। गियासुद्दीन तुगलक राजधानी को सीरी से हटाकर 'तुगलकाबाद' ले गया। उसके पुत्र ने 'आदिलाबाद' आबाद किया और किला राजपिथौरा और सीरी को एक करके शहर का नाम 'जहांपनाह नगर' रखा। फीरोजशाह तुगलक ने 'फीरोजाबाद' आबाद किया और उसे राजधानी बनाया।''(गोपाल,2002,28)

इस प्रकार कुतुबु देहली, किलोखड़ी, सीरी, तुगलकाबाद, आदिलाबाद, जहांपनाह नगर, फिरोजाबाद अर्थात 13वीं एवं 14वीं शताब्दी के मध्य दिल्ली में एक के बाद एक बसी प्रमुख बस्तियों में काफी आबादी के उदाहरण मिलते हैं। ''(चांदीवाला,2005,03) इब्नेबतूता जो 12 सितम्बर 1933 ई0 को मुहम्मद तुगलक के समय में भारत आया उसने अपनी पुस्तक 'रेहला' में देहली की विस्तृत चर्चा की है। उसके अनुसार पूर्वी देशों में, इस्लाम व अन्य मतावलम्बी, किसी का भी ऐसा ऐश्वर्यशाली नगर नहीं है। यह नगर खूब विस्तृत है और पूरे तौर से बसा हुआ है।''(गोपाल,2003,28)

डा0 हरीशंकर श्रीवास्तव ने इसके बारे में लिखा हैः ''नगर चारो तरफ से दीवार से घिरा था। इसके दीवार की चौड़ाई 11 गज थी और उसमें 28 दरवाजे थे। इसमें कोठरियॉ तथा घर बने हुए थे जिसमें चौकीदार तथा द्वारपाल रहते थे। चहारदीवारी में अनाज रखने की बरबारें थीं।''''(श्रीवास्तव,1997,137)

अतः 13 वीं शताब्दी के अन्त तक दिल्ली एशिया में अपना विशिष्ट स्थान बना चुकी थी। मो0 हबीब ने लिखा हैः ''दरअसल दुनिया में कहीं भी इस तरह का कोई शहर नहीं था। अजम के महान मुस्लिम नगर या तो मंगोलों के हाथों नष्ट हो चुके थे या क्षीण होती जनसख्या वाले नगर अनिश्चित जीवन जी रहे थे। मंगोल शासकों की राजधानियां जैसे सराय या समकालीन कराकुरम विशाल बस्तियां थे जिनमें न कोई संस्कृति थी, न नागरिक जीवन। इस काल की रचनाओं में यह चर्चा बार–बार होती है कि दिल्ली, ईराक और अजम के महान शहरों का उत्तराधिकारी शहर है। अमीर खुसरों कहता है कि दिल्ली ज्ञान और कर्म के सम्मिश्रण के चलते ठीक बुखारा जैसा है।''''(हबीब, 2002,31)

प्रो0 इरफान हबीब की दृश्टि में इससे पहले कोई भी ऐसा नगर जिसके लिए पुरातात्विक साक्ष्य मिलते हैं, शायद ही कोई दूर–दूर तक 'दिल्ली' के मुकाबले में ठहरता हो। ''(हबीब, 2002,23) ''1330 ई0 में (अर्थात् मो0 तुगलक जब अधिकांश आबादी को दौलताबाद पहुॅचा चुका था, उसके बाद) देहली को देखने वाले इब्नबतूता ने उसे बेपनाह विस्तार और आबादी वाला शहर कहा था और उसे पूरे इस्लामी पूर्व का सबसे बड़ा शहर करार दिया था और फिर भी वह कहता है कि दौलताबाद आकार में इतना बड़ा जरूर था कि देहली का मुकाबला कर सके।''(हबीब, 2002,23)

सल्तनत काल में दिल्ली के अतिरिक्त लाहौर, मुल्तान, अन्हिलबाड़, लखनौती, देवगिरी, आगरा, बनारस, अलीगढ़, कन्नौज, धौलपुर, ग्वालियर, अजमेर, रणथम्भौर, कोटा, नागौर, जालौर, आदि भी विकसित हुए।

सन्दर्भ

हबीब, मोहम्मद 2002: ''*उत्तरी भारत में नगरीय क्रांति*'', इरफान हबीब (सम्पादक), मध्यकालीन भारत, खण्ड–3 राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,

चांदीवाला, ब्रजकृष्ण, 2005 : *18 दिल्लियों की कहानी* , प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, दिल्ली,

गोपाल, मदन 2003 : *'इब्नबतूता की भारत यात्रा या 14 वीं शदी का भारत* , नेशनल बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, दिल्ली,

श्रीवास्तव, हरिशंकर 1997 : *मध्यकालीन भारतीय इतिहास लेखन(1200–1445),* विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,